P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इतिहास के परिदृश्य में हिन्दी साहित्य

अमित शुक्ल
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

सारांश

हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के संदर्भ में यह कहना उचित है कि जिस देश में इतिहास लेखन के प्रति विशेष उत्साह दृष्टिगत हो उस देश में इतिहास के नव–निर्माण की ऐतिहासिक चेतना विद्यमान होती है। हिन्दी के विद्वान आज भी हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास लिखने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। डॉ. बच्चन सिंह ने अपनी कृति हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में यह उल्लेख किया है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के इतिहास को छोड़कर कोई दूसरा इतिहास नहीं लिखा जा सकता। देखा जाए तो स्वतंत्रता के पश्चात् इतिहास लेखन के प्रति एक नई चेतना जागृत हुई और रामचन्द्र शुक्ल व हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद भी ऐतिहासिक आख्यान को लेकर विद्वानों ने कोई शिथिलता नहीं बरती, साहित्य का इतिहास कई दृष्टियों से सम्पन्न हुआ है जिसमें रचे जा रहे साहित्य के अंतरंग तत्वों को उद्घाटित किया गया है। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन के अनेक प्रयास हो रहे हैं पर अपेक्षित गति नहीं मिल पा रही है। डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. लक्ष्मीसागर, डॉ. कृष्णलाल, भोलानाथ व डॉ. शिव कुमार की कृतियों के अतिरिक्त काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास व डॉ. नगेन्द्र के संपादन में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि अनेक उपलब्धियाँ हैं।हिन्दी के इतिहास लेखन में ऐतिहासिक उपन्यास की भी एक लम्बी परम्परा रहीं है।हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में इतिहास को आधार बनाकर विशिष्ट साहित्यिक रचना की जो मील का पत्थर है।वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की गति मंद है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में परम्परा बोध से लेकर इतिहास बोध तक, सामाजिक चेतना से लेकर साहित्यिक वैशिष्टय तक, समान प्रकृति से लेकर अनन्य प्रवृत्ति तक वर्गीकृत अध्ययन कर हिन्दी साहित्य के इतिहासकार को अनुशीलन कर कार्य करने होंगे। देखा जाये तो इतिहास एक तरह का साहित्य ही है आज के दौर में यह मानने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है कि इतिहास लेखन के लिए ऐतिहासिक गल्प इतिहास से कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। साहित्य इतिहास लेखन की एक अनन्य स्रोत है। इस दृष्टि से इसे विस्तृत करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द : साहित्य, इतिहास, परम्परा, काल खण्डों, ऐतिहासिक क्रांति, सृजनात्मक, प्रवृत्ति, काल विभाजन, इतिहासतिमिर, प्राचीन, भारतीय।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात जब जीवन के विविध क्षेत्रों में इतिहास निर्माण को ललक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहीं थीं। और रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने युग के राष्ट्रीय आन्दोलन के समानांतर ही उन्होंने हिन्दी साहित्य के वैभव से पाठकों का परिचय कराया। शुक्ल जी ने तत्कालीन साहित्य की ऐतिहासिक क्रांति व नवीन सृजनात्मक प्रवृत्तियों को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया, इसीलिए उनका यह प्रयास सही अर्थों में इतिहास बना।[1] उन्होंने हिन्दी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास लिखकर एक नये युग की शुरुआत की उन्होंने लोकमंगल व लोकधर्म की कसौटी पर कवियों और कवि कर्म की परख की और लोक चेतना की दृष्टि से उनके साहित्यिक अवदान की समीक्षा की। यहीं से काल विभाजन और इतिहास के नामकरण की सुदृढ़ परम्परा का प्रारंभ हुआ। इस युग में डॉ. श्यामसुंदर दास, रमाशंकर शुक्ल, 'रसाल', सूर्यकान्त शास्त्री, अयोध्या सिंह उपाध्याय, डॉ. रामकुमार वर्मा, राजनाथ शर्मा आदि विद्वानों ने हिन्दी साहित्य के इतिहास विषय का ग्रन्थों का प्रणयन कर स्तुत्य योगदान दिया।[2] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने शुक्ल युग के इतिहास लेखन के अभावों का गहराई से

अध्ययन किया और हिंन्दी साहित्य की भूमिका 1940 में हिन्दी साहित्य आदिकाल 1952 ई. हिन्दी साहित्य की उदभव विकास 1955 ई., आदि ग्रन्थ लिखकर इस अभाव की पूर्ति की काल विभाजन में उन्होंने कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन के अनेक प्रयास हो रहे हैं पर अपेक्षित गति नहीं मिल पा रही है। डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. लक्ष्मीसागर, डॉ. कृष्णलाल, भोलानाथ व डॉ. शिव कुमार की कृतियों के अतिरिक्त काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास व डॉ. नगेन्द्र के संपादन में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि अनेक उपलब्धियाँ हैं।[3] हिन्दी में इतिहास लेखन की दृष्टि से इतिहासतिमिर का भी अत्यन्त महत्व है। इसके कुल तीन खण्ड 1864 और 1873 में आए यह एक महत्वपूर्ण प्रयास था जिससे हिन्दी में एक ढंग का इतिहास लेखन शुरू हुआ जो अँग्रेजों की इतिहास दृष्टि के अनुरूप था। इसके पश्चात् हिन्दी में लिखे गए इतिहासों में उल्लेखनीय हैं– कैशवराम भट्ट की हिन्दोस्तान का इतिहास, शिवनन्दन सहाय का भारतवर्ष का इतिहास, बंगाल का इतिहास, दीनदयाल सिंह का भारतवर्षीय इतिहास, 1890 में गोकर्ण सिंह का भारत वर्ष का समस्त इतिहास 1899 में, उमानाथ मिश्र का हिन्दुस्तान का इतिहास प्रथम भाग, सरयूप्रसाद मिश्र का नेपाल का प्राचीन इतिहास सन् 1909 में प्रकाशित हिन्दी में कुछ ऐसी भी इतिहास पुस्तके जो ब्रिटिश शासन को खुश करने के उद्देश्य से लिखी गयी और प्रकाशित हुई। उनमे से लज्जाराम शर्मा की लिखी विक्टोरिया का चरित्र है जो 1901 में श्री वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित किया गया था। रमेशचन्द्र की पुस्तक शिवाजी विजय का अनुवाद बलदेव मिश्र ने किया और उसे वेकटेश्वर प्रेस ने 1901 में प्रकाशित किया। राजा राममोहन राय की एक जीवनी यदुनन्दन प्रसाद मिश्र ने 1917 में लिखी। उस समय के हिन्दी बौद्धिकों की भारतीय इतिहास के प्रति दृष्टि को समझने के लिए यह एक अमूल्य पुस्तक है जिसमें एक हजार इतिहास पुरुषों की जीवनियाँ तैयार की गई है। इसी प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने 1919 में वनिता विलास पुस्तक लिखी जिसमें लक्ष्मीबाई को शामिल किया गया।[4]हिन्दी के इतिहास लेखन में ऐतिहासिक उपन्यास की भी एक लम्बी परम्परा रहीं है उनमें भगवतशरण उपाध्याय, राहुल सांस्कृत्यायन और रांगेय राघव की विशिष्ट भूमिका रही। इनमें सबसे पहले भगवत शरण उपाध्याय ने सबेरा संघर्ष गर्जन की कहानियों के माध्यम से मानव समाज के विकास का एक मानचित्र तैयार करेन का प्रयास किया बीसवीं शताब्दी के नौवें दशक के अंत में फिर इसी परम्परा का विकास राहुल सांस्कृत्यायन ने 'बोल्गा से गांगा' 1942 में किया। इसमें विभिन्न काल खण्डों के आधार पर मानव सभ्यता के छह हजार साल के विकास को समझने की कोशिश की है। इसे और भी व्यापक एवं विपुल रूप सर्जनात्मक कल्पना को आधार बनाकर रांगेय राघव ने 'महायात्रा' को दो वृहद खण्डों में प्रस्तुत किया। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में इतिहास को आधार बनाकर विशिष्ट साहित्यिक रचना की, ऐसे साहित्यकारों में जयशंकर प्रसाद जी जिनकी छाया, प्रतिध्वनि, इंद्रजाल, आदि संग्रहों की अधिकांश कहानियाँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। तानसेन रसिया बलम, अशोक गुलाम, जहाँआरा, मदन मृणालिनी, सिकंदर की शपथ, चित्तौर का उद्धार और ममता आदि कहानियों में प्रसाद जी ने इतिहास को प्रस्तुत करते हुए प्रेम के उदात्त स्वरूप को उद्घाटित कर उसके लिए तथा देश के लिए सर्वस्व–बलिदान की भावना को ऊपर उठाकर एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक साहित्य की रचना की।[5] यही उन्होंने नाटकों में भी किया उनके स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, धुवस्वामिनी विशाखा, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री, करुणालय, आदि प्राचीन भारतीय गौरव और सभ्यता का जीवंत इतिहास प्रस्तुत कर विशिष्ट स्थान निर्धारित किया। हिन्दी इतिहास लेखन में प्रसाद जी के बाद डॉ. रामकुमार वर्मा का नाम भी उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक कहानी उपन्यास के क्षेत्र में प्रसाद जी के साथ–साथ वृंदालाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री और भगवतीचरण वर्मा आदि के द्वारा लिखे गए गढ़कुंढार, मृगनयनी, विराटा की पद्मिनी, झांसी की रानी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री के वैशाली की नगरवधू वयं रक्षामः, सोमनाथ तथा आलमगीर तथा भगवतीचरण वर्मा के युवराज चूण्डा, चाणक्य आदि उपन्यास उल्लेखनीय है। हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन को आधार बनाकर लिखे जाने वाले कहानी उपन्यास की एक समृद्ध परम्परा रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन लेखन की अनेक उपलब्धियां रही है। जिनमे रामचन्द्र शुक्ल जी का विषेष स्थान रहा। इस शोध के माध्यम से इतिहास लेखन परम्परा को अधिक से अधिक अध्ययन के माध्यम से हर पहलुओं को समझना है।हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन के संदर्भ में यह कहना उचित है कि जिस देश में इतिहास लेखन के प्रति विशेष उत्साह दृष्टिगत हो उस देश में इतिहास के नव–निर्माण की ऐतिहासिक चेतना विद्यमान होती है। हिन्दी के विद्धान आज भी हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास लिखने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। डॉ. बच्चन सिंह ने अपनी कृति हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में यह उल्लेख किया है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के इतिहास को छोड़कर कोई दूसरा इतिहास नहीं लिखा जा सकता। अध्ययन के माध्यम से यह खोज की गयी कि इतिहास लेखन अति आवष्यक है, नवीन तथ्यों को जानना समझना इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ी है। और शोध पत्र के माध्यम से उनकी खोज करना ही परम उद्देश्य है। इस शोध पत्र के अध्ययन के माध्यम से ये खोज की गयी है।देखा जाए तो स्वतंत्रता के पश्चात् इतिहास लेखन के प्रति एक नई चेतना जागृत हुई और रामचन्द्र शुक्ल व हजारी प्रसाद द्विवेदी के बाद भी ऐतिहासिक आख्यान को लेकर विद्धानों ने कोई शिथिलता नहीं बरती, साहित्य का इतिहास कई दृष्टियों से सम्पन्न हुआ है जिसमें रचे जा रहे साहित्य के अंतरंग तत्वों को उद्घाटित किया गया है। हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन के अनेक प्रयास हो रहे हैं पर अपेक्षित

गति नहीं मिल पा रही है। उन्हें गति देना ही इस शोध अध्ययन का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि हिन्दी का प्रचीन स्वरूप राजस्थानी ,ब्रज की रचनाओं में दान पत्रों पटटे, परवानों वाचिकाओं, टीकाओं, में दृष्गित है। हिन्दी लेखन के विकास का इतिहास व्यापक है। हजारों वर्ष पुरानी हिन्दी की विकास यात्रा में ज्ञानी संतों की वाणी से लोकवाणी का रूप लेती गयी । हिन्दी के विकास को गति देने में जो महत्वपूर्ण रचनाएं हुई वो अत्यंत महत्वपूर्ण है। देखा जाए तो हिन्दी साहित्य में इतिहास लेखन को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने नई चेतना जागृत कर एक नए युग की शुरुआत की जिसके आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अनेक उत्कृष्ट प्रयास हुए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने युग के राष्ट्रीय आदोलन के समानांतर ही उन्होंने हिन्दी साहित्य के वैभव से पाठकों को परिचय करवाया उनका यही प्रयास सही अर्थों में इतिहास बना। वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की गति मंद है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में परम्परा बोध से लेकर इतिहास बोध तक, सामाजिक चेतना से लेकर साहित्यिक वैशिष्टय तक, समान प्रकृति से लेकर अनन्य प्रवृत्ति तक वर्गीकृत अध्ययन कर हिन्दी साहित्य के इतिहासकार को अनुशीलन कर कार्य करने होंगे। देखा जाये तो इतिहास एक तरह का साहित्य ही है आज के दौर में यह मानने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है कि इतिहास लेखन के लिए ऐतिहासिक गल्प इतिहास से कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है। साहित्य इतिहास लेखन की एक अनन्य स्रोत है। इस दृष्टि से इसे विस्तृत करने की आवश्यकता है।[6]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. उषा यादव–हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, सन् 2000, पृ. 45–46*
2. *ताराचन्द्र–भारतीय स्वतंन्त्रता आंदोलन का इतिहास, सन् 1998 साहित्य भवन इलाहाबाद, पृ. 36*
3. *राष्ट्रवाणी द्वैमासिक शोध पत्रिका, सितम्बर सन् 2009 महाराष्ट्र राष्ट्र–भाषा सभा पुणे, पृष्ठ 13*
4. *बाबू शिव प्रसाद–इतिहासतिमिर नाशक 3, 1873, पृ. 83–84, उद्घृत वीरभारत तलवार, रस्साकाशी पृ. 57*
5. *महावीर प्रसाद द्विवेदी–वनिता विलास (लखनऊ) गंगा पुस्तक माला कार्यालय, सन् 1926 पृ. 39, 67*
6. *स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष।*